RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
अक्टूबर
01
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index

By Ankit Avasthi Sir

भारतीय खाद्य निगम (FCI) ने अन्न दर्पण के तहत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन प्रणाली में परिवर्तन किया

Food Corporation of India (FCI) transforms supply chain management system

भारतीय खाद्य निगम (FCI) ने अपनी मौजूदा आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन प्रणाली को आधुनिक बनाने के लिए एक व्यापक डिजिटल परिवर्तन पहल शुरू की है, जिसे **"अन्न दर्पण"** नामक एक नई **एकीकृत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन प्रणाली** के रूप में कार्यान्वित किया जा रहा है। यह पहल उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अंतर्गत **100 दिन की उपलब्धियों** का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अन्न दर्पण प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ:

- ✓ **डिजिटल परिवर्तन:** अन्न दर्पण प्रणाली भारतीय खाद्य निगम के सभी स्तरों पर **आपूर्ति श्रृंखला** के संचालन और सेवाओं को आधुनिक और सुव्यवस्थित बनाने पर केंद्रित है। यह **मंडियों, मिलों, डिपो, क्षेत्रीय और मुख्यालय स्तरों** के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित करेगी।
- ✓ **तकनीकी सुधार:** यह प्रणाली उन्नत प्रौद्योगिकी और अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए बनाई जा रही है। इसके तहत **क्लाउड होस्टिंग, सर्विस मेश आर्किटेक्चर, और एपीआई-आधारित एकीकरण** जैसी तकनीकों का इस्तेमाल किया जाएगा।
- ✓ **बेहतर प्रदर्शन और उत्पादकता:** आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया जाएगा।
- ✓ **डेटा-संचालित निर्णय:** यह प्रणाली **डेटा एनालिटिक्स** का उपयोग कर निर्णय लेने की प्रक्रिया को अधिक जानकारीपूर्ण और प्रभावी बनाएगी। एक **केंद्रीकृत एनालिटिक्स प्लेटफ़ॉर्म** इसके लिए विकसित किया जा रहा है।
- ✓ **इंटरएक्टिव और उपयोगकर्ता-अनुकूल डिज़ाइन:** इस नई प्रणाली का उपयोगकर्ता **इंटरफेस सहज और सरल** होगा, जिससे उपयोगकर्ताओं को इसे संचालित करने में आसानी होगी।
- ✓ **सचलता-प्रथम दृष्टिकोण:** प्रणाली को किसी भी समय और किसी भी स्थान से आसानी से उपयोग किया जा सकेगा।

मेसर्स कोफोर्ज लिमिटेड की भूमिका:

मेसर्स कोफोर्ज लिमिटेड को इस प्रणाली के **डिजाइन, विकास, कार्यान्वयन और रखरखाव** के लिए चुना गया है। **14 जून 2024** को अनुबंध पर हस्ताक्षर होने के बाद यह प्रक्रिया औपचारिक रूप से शुरू की गई। कोफोर्ज लिमिटेड ने भारतीय खाद्य निगम के संचालन का गहन अध्ययन कर आवश्यकताओं का **विश्लेषण और दस्तावेजीकरण** किया है।

प्रमुख उद्देश्य:

- **आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता और उत्पादकता को अनुकूलित करना।**
- **इंटरफेस को उपयोगकर्ता-अनुकूल बनाना।**
- **डेटा के माध्यम से रणनीतिक निर्णय लेने में मदद करना।**
- **भारतीय खाद्य निगम की आंतरिक और बाहरी प्रणालियों का एकीकरण करना।**
- **मौजूदा प्रणालियों को विलय कर अतिरेक को समाप्त करना और कार्यकुशलता बढ़ाना।**

निष्कर्ष: अन्न दर्पण प्रणाली भारतीय खाद्य निगम की आपूर्ति श्रृंखला को डिजिटल रूप से सक्षम बनाकर उसे आधुनिक और कुशल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

Food Corporation of India

भारतीय खाद्य निगम (FCI)

भारतीय खाद्य निगम (FCI) की स्थापना **1964 में खाद्य निगम अधिनियम** के तहत की गई थी, जिसका उद्देश्य भारत की खाद्य नीति के तीन प्रमुख उद्देश्यों को पूरा करना है:

- ☑ **किसानों के हितों की रक्षा:** किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिले, इसके लिए **मूल्य समर्थन अभियान** चलाया जाता है।
- ☑ **सार्वजनिक वितरण प्रणाली:** देशभर में **खाद्यान्नों का वितरण** किया जाता है ताकि जनसाधारण को आवश्यक अनाज उपलब्ध हो सके।
- ☑ **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा:** खाद्यान्नों का **बफर स्टॉक** बनाए रखना ताकि संकट के समय खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके।

FCI की भूमिका:

अपनी स्थापना के बाद से, FCI ने **भारत की खाद्य सुरक्षा** को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने खाद्य संकट प्रबंधन प्रणाली को **स्थिर और भरोसेमंद प्रणाली** में परिवर्तित किया है। इसके माध्यम से सार्वजनिक वितरण प्रणाली और बफर स्टॉक प्रबंधन में सुधार हुआ है, जिससे देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई है।

iDEX परियोजना / iDEX Project

आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत, भारतीय सेना ने **इनोवेशन फॉर डिफेंस एक्सीलेंस (iDEX)** के माध्यम से आठवें खरीद अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। यह अनुबंध **मेसर्स क्यूएनयू लैब्स** के साथ किया गया, जो **'क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन'** की खरीद से संबंधित है। इस तकनीक से **एल्गोरिथम-आधारित एन्क्रिप्शन सिस्टम** को प्रतिस्थापित किया जाएगा, जिससे सेना की संचार सुरक्षा में सुधार होगा।

iDEX का उद्देश्य:

iDEX का शुभारंभ **12 अप्रैल 2018** को **रक्षा एक्सपो इंडिया 2018** के दौरान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था। इसका उद्देश्य है:

- ✓ **रक्षा एवं एयरोस्पेस क्षेत्र** में नवाचारों को प्रोत्साहित करना।
- ✓ **स्टार्टअप्स, एमएसएमई, अनुसंधान एवं विकास (R&D) संस्थानों,** और अन्य नवोन्मेषकों को सहयोग देना।
- ✓ तकनीकी विकास को बढ़ावा देना जो भविष्य में **भारतीय रक्षा और अंतरिक्ष संगठनों** के लिए उपयोगी हो सके।

क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन:

क्यूएनयू लैब्स ने **200 किमी सिंगल हॉप क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन** का प्रस्ताव iDEX के **ओपन चैलेंज 2.0** के तहत रखा था। यह तकनीक सेना की संचार प्रणाली को अधिक सुरक्षित बनाएगी और **जनशक्ति संबंधित प्रतिबद्धता** को बढ़ाएगी।

iDEX की उपलब्धियां:

- वर्तमान में iDEX के तहत **74 एआई प्रोजेक्ट** चल रहे हैं।
- कुल **77 स्टार्टअप्स** को भारतीय सेना के लिए अत्याधुनिक समाधान विकसित करने के लिए सहायता मिल रही है।
- सेना द्वारा पहले ही चार उपकरणों का उपयोग किया जा चुका है, और उनके परिणामों के आधार पर तकनीकी विकास को और अधिक गति दी जाएगी।

iDEX ने **रक्षा स्टार्टअप समुदाय** के साथ मजबूत संपर्क स्थापित कर भारत की रक्षा तकनीक में नवाचार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन (QKD) के बारे में:

क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन (QKD), जिसे **क्वांटम क्रिप्टोग्राफी** भी कहा जाता है, एक उन्नत तकनीक है जो सुरक्षित संचार के लिए गुप्त कुंजियों (Secret Keys) को साझा और वितरित करने का साधन प्रदान करती है। QKD की मदद से जानकारी साझा करने का तरीका पारंपरिक क्रिप्टोग्राफी से अलग है, क्योंकि यह भौतिकी के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है, न कि केवल गणितीय एल्गोरिदम पर।

QKD की विशेषताएँ:

- ✓ **सुरक्षित कुंजी वितरण:** QKD एक तरीका है जिसके द्वारा **क्रिप्टोग्राफिक प्रोटोकॉल** के लिए आवश्यक गुप्त कुंजियों को सुरक्षित रूप से साझा किया जा सकता है।
- ✓ **क्वांटम यांत्रिकी का उपयोग:** QKD भौतिकी के नियमों का उपयोग करता है, खासकर **क्वांटम यांत्रिकी** का, जो इसे अधिक सुरक्षित बनाता है। किसी भी **अवांछित इंटरसेप्शन** का तुरंत पता चल जाता है।
- ✓ **अत्यधिक सुरक्षा:** यह तकनीक पारंपरिक एल्गोरिदम से अधिक सुरक्षित है, क्योंकि इसकी सुरक्षा **गणितीय जटिलताओं** पर आधारित नहीं होती, बल्कि क्वांटम सिद्धांत पर आधारित होती है, जो उसे छेड़छाड़ से अछूता बनाती है।

पारंपरिक क्रिप्टोसिस्टम और QKD में अंतर:

- ☑ **पारंपरिक क्रिप्टोसिस्टम:** ये क्रिप्टोग्राफी गणितीय एल्गोरिदम की जटिलता पर आधारित होते हैं। उदाहरण के लिए, **RSA या AES** जैसे **एन्क्रिप्शन प्रोटोकॉल जटिल गणितीय** समस्याओं को सुलझाने की क्षमता पर निर्भर करते हैं।
- ☑ **QKD:** क्वांटम क्रिप्टोग्राफी की सुरक्षा भौतिकी के नियमों पर आधारित होती है। इसका मतलब है कि अगर कोई संदेश को इंटरसेप्ट करने की कोशिश करता है, तो यह प्रक्रिया तुरंत विफल हो जाती है, क्योंकि **क्वांटम यांत्रिकी** के नियमों के अनुसार, कोई भी अवलोकन प्रणाली को बाधित करता है।

क्रिप्टोग्राफी का महत्व: क्रिप्टोग्राफी का उपयोग सुरक्षित संचार के लिए किया जाता है, जहां केवल प्रेषक और संदेश का प्राप्तकर्ता ही संदेश को समझ सकते हैं। इसके लिए **क्रिप्टोग्राफिक एल्गोरिदम** और **प्रोटोकॉल** बनाए जाते हैं, ताकि विशेष रूप से इंटरनेट जैसे असुरक्षित नेटवर्क के माध्यम से भेजे गए डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

संयुक्त सैन्य अभ्यास काजिंद-2024 / Joint Military Exercise Kazind-2024

भारत और कजाकिस्तान के बीच चल रहे संयुक्त सैन्य अभ्यास **'काजिंद-2024'** का आयोजन उत्तराखंड के **औली** में हो रहा है। यह अभ्यास दोनों देशों के सैन्य बलों के बीच **सहयोग, अंतर-संचालन और सौहार्द** को बढ़ाने के लिए आयोजित किया जाता है और **2016 से प्रति वर्ष इसका आयोजन** हो रहा है।

मुख्य विशेषताएँ:

- ✓ इस अभ्यास में **भारतीय सेना** के **120 जवान**, जिसमें **कुमाऊं रेजिमेंट** की एक बटालियन और **भारतीय वायु सेना** के कर्मी शामिल हैं, भाग ले रहे हैं। **कजाकिस्तान** की टुकड़ी का प्रतिनिधित्व उनकी **थल सेना और वायु सेना** के जवानों द्वारा किया जाएगा।
- ✓ **उद्देश्य:** इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र के सातवें अध्याय के तहत उप-पारंपरिक परिदृश्य में **आतंकवाद विरोधी अभियानों** के लिए दोनों देशों की संयुक्त सैन्य क्षमता को बढ़ाना है।
- ✓ **केंद्रित क्षेत्र:** अर्ध-शहरी और पहाड़ी इलाकों में आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ **संयुक्त संचालन** का अभ्यास किया जाएगा।
- ✓ **सामरिक अभ्यास:** अभ्यास के दौरान शामिल गतिविधियों में संयुक्त कमान पोस्ट की स्थापना, **खुफिया निगरानी, हेलीपैड और लैंडिंग स्थल की सुरक्षा, कॉम्बैट फ्री फॉल, विशेष हेलीबोर्न ऑपरेशन, ड्रोन और काउंटर ड्रोन सिस्टम का उपयोग**, तथा घेराव और तलाशी अभियान शामिल हैं।

इस अभ्यास से **संयुक्त सैन्य रणनीतियों**, तकनीकों और प्रक्रियाओं में सर्वोत्तम उपायों को साझा करने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा, यह भारत और कजाकिस्तान के बीच **रक्षा सहयोग** को बढ़ावा देगा और द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करेगा।

भारत और कजाकिस्तान संबंध:

भारत और कजाकिस्तान के बीच **रक्षा संबंध 1992** में कजाकिस्तान की स्वतंत्रता के बाद से लगातार मजबूत हो रहे हैं। दोनों देशों ने **22 फरवरी 1992 को राजनयिक संबंध** स्थापित किए, और तब से यह सहयोग विभिन्न रक्षा और सुरक्षा क्षेत्रों में विस्तारित हुआ है।

महत्वपूर्ण घटनाएँ और समझौते:

- ☑ **जुलाई 2015** में, दोनों देशों ने **"रक्षा और सैन्य तकनीकी सहयोग"** पर एक महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते ने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के लिए एक रूपरेखा प्रदान की, जिसमें **सैन्य-तकनीकी सहयोग, सैन्य शिक्षा और प्रशिक्षण**, और **संयुक्त सैन्य अभ्यास** शामिल हैं।
- ☑ **लेबनान में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन (UNIFIL)** के तहत, **2018** में कजाकिस्तान के सैनिकों को **भारतीय कमान** के तहत तैनात किया गया था, जिससे दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग का एक और मजबूत उदाहरण प्रस्तुत हुआ।

कजाकिस्तान: एक परिचय

कजाकिस्तान मध्य एशिया का सबसे बड़ा और क्षेत्रफल के हिसाब से दुनिया का **नौवां सबसे बड़ा देश** है। यह एक महत्वपूर्ण यूरेशियाई राष्ट्र है जो **एशिया और यूरोप** के बीच स्थित है। कजाकिस्तान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और भौगोलिक विविधता इसे एक प्रमुख राष्ट्र बनाती है।

प्रमुख जानकारी:

- ☑ **राजधानी:** नूर-सुल्तान (पूर्व नाम: अस्ताना)
- ☑ **सबसे बड़ा शहर:** अल्माटी
- ☑ **क्षेत्रफल:** लगभग 27.24 लाख वर्ग किलोमीटर
- ☑ **आबादी:** लगभग 1.9 करोड़ (2023 अनुमान)
- ☑ **आधिकारिक भाषा:** कज़ाख (रूसी भी व्यापक रूप से बोली जाती है)
- ☑ **मुद्रा:** कज़ाख तेंगे (KZT)
- ☑ **धर्म:** इस्लाम (मुख्य धर्म), ईसाई धर्म भी है।

भूगोल: कजाकिस्तान का भूगोल बहुत विविध है। इसमें पहाड़, घास के मैदान, रेगिस्तान और झीलें शामिल हैं। यह कैस्पियन सागर से पूर्व और दक्षिण में **चीन, किर्गिस्तान, उज्बेकिस्तान, और तुर्कमेनिस्तान** से घिरा हुआ है।

इतिहास: कजाकिस्तान का क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से सिल्क रोड का हिस्सा रहा है और कई प्राचीन सभ्यताओं का केंद्र रहा है। सोवियत संघ का हिस्सा रहने के बाद, कजाकिस्तान ने **16 दिसंबर 1991** को स्वतंत्रता प्राप्त की। यह **सोवियत संघ के विघटन** के बाद स्वतंत्र होने वाले पहले देशों में से एक था।

अर्थव्यवस्था: कजाकिस्तान की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से तेल, गैस और खनिजों पर आधारित है। यह **कच्चे तेल** के उत्पादन में दुनिया के शीर्ष देशों में से एक है और इसकी अर्थव्यवस्था ऊर्जा संसाधनों पर अत्यधिक निर्भर है।

कर्मयोगी भारत / Karmayogi Bharat

देशभर में चल रहे **'स्वच्छता ही सेवा'** (SHS) 2024 पखवाड़े के तहत, **आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय** (MoHUA) ने **iGOT Karmayogi** प्लेटफॉर्म पर **स्वच्छता ही सेवा (SHS) 2024** पाठ्यक्रम की शुरुआत की। यह पाठ्यक्रम **राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों** के अधिकारियों, शहरी स्थानीय निकायों के प्रतिनिधियों, सफाई मित्रों, और नागरिकों को स्वच्छता संबंधी पहलों को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक जानकारी और कौशल से दक्ष करने का महत्वपूर्ण कदम है।

कर्मयोगी भारत :

कर्मयोगी भारत एक **स्पेशल पर्पस व्हीकल (एस.पी.वी.)** है, जिसे **कंपनी अधिनियम, 2013** की **धारा 8** के तहत सरकारी स्वामित्व वाली गैर-लाभकारी कंपनी के रूप में शामिल किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य **आईगॉट कर्मयोगी प्लेटफॉर्म** का संचालन और प्रबंधन करना है, जो सिविल सेवा अधिकारियों के लिए उनकी क्षमता बढ़ाने हेतु किसी भी समय, कहीं-भी, और किसी-भी उपकरण से सीखने की सुविधा प्रदान करता है।

मुख्य विशेषताएँ: सदस्यता-आधारित राजस्व मॉडल: एस.पी.वी. सरकारी डिजिटल परिसंपत्तियों का **स्वामित्व, प्रबंधन, रखरखाव** और सुधार करती है, जिसमें **सॉफ्टवेयर, कंटेंट, प्रक्रिया** आदि के **आईपीआर** शामिल हैं।

विजन: **एक मजबूत डिजिटल ईकोसिस्टम स्थापित करना** जो भारतीय सिविल सेवा क्षमता निर्माण के परिदृश्य को बेहतर बनाता है और अधिकारियों को भविष्य के लिए तैयार करने में निरंतर सीखने में सक्षम बनाता है।

मिशन: **सिविल सेवा अधिकारियों के लिए एक ऑल-इन-वन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म** बनाना, जो:

- **सीखने का मार्गदर्शन करता है।**
- **चर्चाओं की मेज़बानी करता है।**
- **करियर प्रबंधन में मदद करता है।**
- **अधिकारियों की क्षमता को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करने के लिए विश्वसनीय मूल्यांकन करता है।**

निष्कर्ष: कर्मयोगी भारत सिविल सेवा अधिकारियों के लिए सीखने और विकास के नए अवसर प्रदान करता है, जिससे वे अपनी क्षमताओं को और भी निखार सकें। यह पहल न केवल सिविल सेवा में सुधार लाने में मदद करेगी, बल्कि अधिकारियों को एक प्रतिस्पर्धात्मक और सहयोगी वातावरण में काम करने के लिए तैयार करेगी।

कर्मयोगी भारत के प्रमुख कार्य:

- ☑ **डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रबंधन:** **डिजिटल प्लेटफॉर्म** और **इंफ्रास्ट्रक्चर की डिजाइन**, कार्यान्वयन, बढ़ोतरी और प्रबंधन करना।
- ☑ **आईपीआर प्रबंधन:** सरकार की ओर से बनाई गई सभी संसाधनों के आईपीआर का प्रबंधन और दायित्व लेना।
- ☑ **सामग्री विकास:** आंतरिक रूप से **सामग्री बनाना, खरीदना, स्रोत बनाना और संबंधित पक्षों** द्वारा आईगॉट कर्मयोगी पर सामग्री का सत्यापन सुनिश्चित करना।
- ☑ **आकलन सेवाएँ:** प्रॉक्टर्ड आकलन सेवाओं का प्रबंधन और उपलब्ध कराना।
- ☑ **डेटा गवर्नेंस:** **टेलीमेट्री डेटा** के गवर्नेंस को संचालित करना और चिह्नित अधिकारियों को डेटा/विश्लेषण उपलब्ध कराना।
- ☑ **गुणवत्ता जांच:** सरकार या आयोग द्वारा जारी प्रासंगिक **दिशानिर्देशों और विनियमों** का पालन और सुधार के लिए समय-समय पर गुणवत्ता जांच।
- ☑ **शिकायत प्रबंधन:** बिना रुकावट संचालन के लिए एक मजबूत शिकायत प्रबंधन तंत्र उपलब्ध कराना।
- ☑ **उपापन प्रक्रिया:** सरकार के प्रासंगिक **मानदंडों और दिशानिर्देशों** का अनुपालन करते हुए उपापन (प्रोक्योरमेंट) करना।
- ☑ **सूचना का संप्रेषण:** **डीओपीटी** को सभी प्रासंगिक जानकारी देना ताकि संसदीय निरीक्षण और सीएजी निरीक्षण को जवाब दिया जा सके और **NPCSCB** के लिए एक प्रभावी तथा सहयोगी भूमिका निभाई जा सके।

भारत जैव अर्थव्यवस्था रिपोर्ट 2024 / India Bioeconomy Report 2024

जैव प्रौद्योगिकी विभाग और बीआईआरएसी द्वारा प्रस्तुत **"भारत जैव अर्थव्यवस्था रिपोर्ट 2024"** में भारतीय जैव अर्थव्यवस्था क्षेत्र की अभूतपूर्व प्रगति का उल्लेख किया गया है।

जैव अर्थव्यवस्था की परिभाषा: जैव अर्थव्यवस्था एक स्थायी आर्थिक प्रणाली है जिसमें **उत्पाद, प्रक्रियाएं और सेवाएं जैविक संसाधनों** के ज्ञान-आधारित उत्पादन और उपयोग के माध्यम से प्रदान की जाती हैं।

मुख्य निष्कर्ष: जैव अर्थव्यवस्था का आकार:

- ✓ भारत की जैव **अर्थव्यवस्था 2023** में **151 बिलियन डॉलर** तक पहुँच गई है, जो भारत के **सकल घरेलू उत्पाद का 4.25%** है।
- ✓ यह क्षेत्र **3.3 मिलियन** से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करेगा।
- ✓ **2030** तक इसकी वृद्धि **300 बिलियन डॉलर** तक होने की उम्मीद है।

प्रमुख उप-क्षेत्र:

- **जैव औद्योगिक (48%):** इसमें **जैव ईंधन, रसायन, जैव प्लास्टिक** आदि शामिल हैं।
- **बायोएग्री (8%):** जैसे **बीटी कॉटन जैसी आनुवंशिक** रूप से संशोधित फसलें।
- **बायोफार्मा (36%): फार्मास्यूटिकल्स, चिकित्सा उपकरण, और डायग्नोस्टिक्स** पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **बायोआईटी/अनुसंधान सेवाएं (8%):** इसमें **अनुबंध अनुसंधान, नैदानिक परीक्षण, और जैव सूचना विज्ञान** शामिल हैं।

प्रमुख उपलब्धियां:

- **वैश्विक वैक्सीन निर्माता:** भारत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा खरीदे गए **टीकों का 25% आपूर्ति** की और **20% निर्यात अफ्रीका** को किया।
- **ऊर्जा स्वतंत्रता:** भारत दुनिया का **तीसरा सबसे बड़ा इथेनॉल उत्पादक और उपभोक्ता** है।
- **सटीक स्वास्थ्य सेवा में सफलता: हीमोफीलिया ए** के लिए देश के **पहले जीन थेरेपी** क्लिनिकल परीक्षण को मंजूरी मिली।
- **बायोटेक स्टार्टअप की वृद्धि:** 2021 से 2023 के बीच, बायोटेक स्टार्टअप की संख्या लगभग **8,500 (59% वृद्धि)** हो गई।

जैव अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल:

- ☑ **जैव-विनिर्माण पहल:** जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) ने **बायोई3 नीति** शुरू की है।
- ☑ **बौद्धिक संपदा (आईपी) दिशानिर्देश:** 2023 में **सार्वजनिक वित्त पोषित अनुसंधान** के व्यावसायीकरण में सुधार के लिए नए दिशानिर्देश जारी किए गए।
- ☑ **गवर्नेंस और संरचनात्मक सुधार: 14 स्वायत्त संस्थानों** का जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान और नवाचार परिषद में पुनर्गठन किया गया।
- ☑ **बायोआरआरएपी के साथ विनियामक सुव्यवस्थितीकरण:** जैविक अनुसंधान के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए **जैविक अनुसंधान विनियामक अनुमोदन पोर्टल (बायोआरआरएपी)** की शुरुआत की गई।

जैवविज्ञान विभाग:

जैव विज्ञानं विभाग की **स्थापना 1986** में की गई थी।

दूरदृष्टि:

जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करना और इसे **गरीबों के कल्याण, धन सृजन, और सामाजिक न्याय** के साधन के रूप में विकसित करना भारत की दूरदर्शिता है। यह दृष्टिकोण न केवल **जैव प्रौद्योगिकी** के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्धता की घोषणा करता है, बल्कि समाज, पर्यावरण, और उद्योग के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता को भी बताता है।

लक्ष्य और प्रतिबद्धताएँ: जैव प्रौद्योगिकी मानव जाति के लाभ के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके प्रमुख लक्ष्यों में शामिल हैं:

- ☑ **संवर्धन:** जैव प्रौद्योगिकी की संभावनाओं का संवर्धन करना।
- ☑ **निवेश:** उत्पादों के निर्माण में प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए निवेश सुनिश्चित करना।
- ☑ **कृषि और पोषण:** कृषि, पोषण, सुरक्षा, और **आणविक चिकित्सा** जैसे क्षेत्रों में पर्यावरण के अनुकूल किफायती प्रौद्योगिकियों का विकास करना।
- ☑ **अनुसंधान का व्यावसायीकरण:** बाजार में नए जैव उत्पादों को लाने के लिए अनुसंधान के व्यावसायीकरण की मजबूत बुनियादी संरचना स्थापित करना।
- ☑ **सामाजिक आर्थिक विकास:** जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों के माध्यम से **महिलाओं, ग्रामीणों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों** का उत्थान करना।
- ☑ **उद्योग को बढ़ावा:** जैव प्रौद्योगिकी उद्योग को प्रोत्साहित करना।

सामाजिक विकास और जैव सुरक्षा: जैव प्रौद्योगिकी आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक विकास को बढ़ावा दिया जाएगा।

वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण (ASI) 2022-23 / Annual Survey of Industries (ASI) 2022-23

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने वित्तीय वर्ष **2022-23** के लिए **वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण** (ASI) के परिणाम जारी किए हैं। यह सर्वेक्षण उद्योगों की **संरचना, विकास और उनके विभिन्न आर्थिक मापदंडों** में बदलाव को समझने में मदद करता है।

सर्वेक्षण का उद्देश्य:

- ✓ **उत्पादन, मूल्य वर्धन, रोजगार, पूंजी निर्माण** जैसे विभिन्न मापदंडों के संदर्भ में विनिर्माण उद्योगों की जानकारी प्रदान करना।
- ✓ राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर **राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी** को मूल्यवान इनपुट प्रदान करना।

मुख्य परिणाम:

- ☑ **सकल मूल्य वर्धन (GVA):**
  - वर्ष 2022-23 में **GVA में 7.3%** की वृद्धि हुई (वर्ष 2021-22 की तुलना में)।
  - **इनपुट में 24.4%** और उत्पादन में **21.5%** की वृद्धि हुई।
- ☑ **महत्वपूर्ण आर्थिक मापदंड:**
  - **निवेशित पूंजी, इनपुट, आउटपुट, GVA, रोजगार और मजदूरी** जैसे मापदंडों में वृद्धि हुई है, और ये महामारी-पूर्व स्तरों को पार कर गए हैं।
- ☑ **उद्योगों का योगदान:**
  - प्रमुख उद्योगों में **मूल धातु, कोक, परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद, खाद्य उत्पाद, रसायन और रासायनिक उत्पाद** शामिल हैं।
  - इन उद्योगों ने कुल उत्पादन में लगभग **58%** का योगदान दिया और 2021-22 की तुलना में **24.5%** की उत्पादन वृद्धि और **2.6%** की GVA वृद्धि दिखाई।
- ☑ **रोजगार और औसत पारिश्रमिक:**
  - 2022-23 में इस क्षेत्र में रोजगार की संख्या **22.14 लाख** से अधिक हो गई है (महामारी-पूर्व स्तर की तुलना में)।
  - प्रति व्यक्ति औसत पारिश्रमिक में **6.3%** की वृद्धि हुई।
- ☑ **राज्य स्तर पर जीवीए:**
  - **महाराष्ट्र** 2022-23 में GVA में पहले स्थान पर रहा, उसके बाद **गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक**, और **उत्तर प्रदेश** रहे।
  - शीर्ष पांच राज्यों ने मिलकर देश के कुल विनिर्माण GVA में **54%** से अधिक का योगदान दिया।
- ☑ **रोजगार देने वाले शीर्ष राज्य**: **तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश**, और **कर्नाटक** ने मिलकर वर्ष 2022-23 में कुल विनिर्माण रोजगार में लगभग **55%** का योगदान दिया।

निष्कर्ष: ASI 2022-23 के परिणाम भारत के विनिर्माण क्षेत्र की मजबूती और विकास को दर्शाते हैं, जिसमें **आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि, रोजगार सृजन और औसत पारिश्रमिक में सुधार** शामिल है। यह सर्वेक्षण न केवल उद्योग के वर्तमान परिदृश्य को समझने में मदद करता है, बल्कि भविष्य की नीतियों के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) :

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण मंत्रालय है, जिसकी **स्थापना 15 अक्टूबर 1999** को **सांख्यिकी विभाग और कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग** के विलय के परिणामस्वरूप हुई। मंत्रालय का मुख्य उद्देश्य देश में **सांख्यिकी के विकास और गुणवत्ता** में सुधार करना है।

मंत्रालय की संरचना: मंत्रालय में दो प्रमुख स्कंध हैं:

1. **सांख्यिकी स्कंध:**
2. **कार्यक्रम कार्यान्वयन स्कंध:**

स्वायत्त संस्थान:

- ✓ **राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग:** इस आयोग का गठन भारत सरकार के संकल्प के माध्यम से किया गया है।
- ✓ **भारतीय सांख्यिकीय संस्थान:** यह एक स्वायत्त संस्थान है, जिसे संसद के एक अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया गया है।

सांख्यिकी के विकास और गुणवत्ता:

- ☑ मंत्रालय देश में सांख्यिकी के विस्तार और गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देता है।
- ☑ सांख्यिकी के निर्माण के लिए **प्रशासनिक स्रोतों, सर्वेक्षणों, तथा केन्द्र और राज्य सरकारों** के आंकड़ों का उपयोग किया जाता है।
- ☑ सभी सर्वेक्षण **वैज्ञानिक नमूना पद्धति** पर आधारित होते हैं, और क्षेत्रीय स्टाफ के माध्यम से डेटा संग्रह किया जाता है।

भारतजेन : 'मल्टीमॉडल लार्ज लैंग्वेज मॉडल' पहल
BharatGen: 'Multimodal Large Language Model' initiative

हाल ही में **'भारतजेन'** का उद्घाटन किया गया, जो एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य **सार्वजनिक सेवाओं की आपूर्ति में क्रांति** लाना और नागरिकों के साथ जुड़ाव को बढ़ावा देना है। यह पहल **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी)** के अंतर्गत **अंतरविषयी साइबर-भौतिकी प्रणाली से संबंधित राष्ट्रीय मिशन (एनएम-आईसीपीएस)** द्वारा **IIT बम्बई** के नेतृत्व में विकसित की जा रही है।

उद्देश्य और महत्व:

'भारतजेन' का मुख्य लक्ष्य एक ऐसी **जनरेटिव एआई प्रणाली** तैयार करना है जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले **मूल पाठ और मल्टीमॉडल कंटेंट** उत्पन्न कर सके। यह परियोजना भारत की **सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषाई विविधता** को ध्यान में रखते हुए विकसित की जा रही है, और इसका उद्देश्य **सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक समानता** जैसी व्यापक जरूरतों को पूरा करना है।

प्रमुख विशेषताएँ: 'भारतजेन' की **चार** मुख्य विशेषताएँ हैं:

- ☑ **बहुभाषी एवं मल्टीमॉडल मॉडल:** यह फाउंडेशन मॉडल की **बहुभाषी और मल्टीमॉडल** प्रकृति को समाहित करता है।
- ☑ **भारतीय डेटा सेट आधारित निर्माण:** भारतीय भाषाओं की विशेषताओं को समझते हुए **डेटा सेट पर आधारित निर्माण और प्रशिक्षण।**
- ☑ **ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म:** अनुसंधान को सुलभ और साझा करने में मदद करने के लिए एक **ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म।**
- ☑ **AI अनुसंधान का इकोसिस्टम:** देश में जनरेटिव **एआई अनुसंधान को प्रोत्साहित** करने के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र का विकास।

कार्यान्वयन और भागीदार: इस पहल का कार्यान्वयन **IIT बम्बई में IoT और IoE से संबंधित TIH फाउंडेशन** द्वारा किया जाएगा, जिसमें **IIT बम्बई, IIIT हैदराबाद, IIT मंडी, IIT कानपुर, IIT हैदराबाद, IIM इंदौर और IIT मद्रास** जैसे प्रमुख शैक्षणिक संस्थान भागीदार हैं।

भविष्य की योजनाएँ: 'भारतजेन' **जुलाई 2026** तक कई प्रमुख उप्लाधियों को प्राप्त करने की रूपरेखा तैयार करता है, जिसमें व्यापक **एआई मॉडल** का विकास, प्रयोग और भारत की जरूरतों के अनुरूप एआई बेंचमार्क की स्थापना शामिल है। यह उद्योग जगत और सार्वजनिक पहलों में एआई को व्यापक रूप से अपनाने पर भी ध्यान केंद्रित करेगा।

निष्कर्ष: **'भारतजेन'** पहल न केवल भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक संदर्भों को महत्व देती है, बल्कि यह **आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण** के अनुरूप है। इससे भारत में **एआई प्रौद्योगिकियों के विकास** को प्रोत्साहन मिलेगा, और यह सुनिश्चित करेगा कि सभी वर्गों के नागरिकों को एआई के लाभों तक पहुंच प्राप्त हो।

क्रूज भारत मिशन / Cruise India Mission

केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने मुंबई बंदरगाह से **क्रूज भारत मिशन** की शुरुआत की। इस मिशन का उद्देश्य देश में क्रूज पर्यटन की अपार संभावनाओं को बढ़ावा देना है, जिसके तहत **2029 तक क्रूज यात्रियों की संख्या को दोगुना** करने का लक्ष्य रखा गया है।

मिशन के उद्देश्य:

- ✓ **वैश्विक केंद्र बनना:** भारत को क्रूज पर्यटन के **वैश्विक केंद्र** के रूप में स्थापित करना।
- ✓ **क्रूज यात्रियों की संख्या में वृद्धि: पांच वर्षों** में क्रूज यात्रियों की संख्या **0.5 मिलियन से बढ़ाकर 1 मिलियन** करना।
- ✓ **क्रूज टर्मिनलों का विकास: अंतरराष्ट्रीय क्रूज टर्मिनलों** की संख्या **2 से 10 तक** और नदी क्रूज टर्मिनलों की संख्या **50 से 100** तक बढ़ाना।

क्रूज भारत मिशन के चरण: मिशन को तीन चरणों में लागू किया जाएगा:

1. **चरण 1 (01.10.2024 - 30.09.2025):** पड़ोसी देशों के साथ **अध्ययन, मास्टर प्लानिंग और मौजूदा क्रूज टर्मिनलों** का आधुनिकीकरण।
2. **चरण 2 (01.10.2025 - 31.03.2027):** नए क्रूज टर्मिनलों और **मरीना का विकास।**
3. **चरण 3 (01.04.2027 – 31.03.2029):** भारतीय उपमहाद्वीप में सभी **क्रूज सर्किटों का एकीकरण।**

प्रमुख विशेषताएँ:

- ☑ **इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास:** विश्व स्तरीय टर्मिनल, **मरीना, जल हवाई अड्डे और हेलीपोर्ट का निर्माण।**
- ☑ **प्रौद्योगिकी का लाभ: चेहरे की पहचान और ई-वीजा सुविधाओं** जैसे डिजिटल समाधानों का उपयोग।
- ☑ **समावेशी विकास:** सभी हितधारकों के लिए समावेशी और न्यायसंगत विकास सुनिश्चित करना।

संरचना और प्रौद्योगिकी का विकास:

मिशन का उद्देश्य विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास करना है, जिससे यात्रियों को एक सहज अनुभव मिले। इसमें **बंदरगाहों, क्रूज लाइनों, पोत संचालकों, टूर ऑपरेटरों और स्थानीय समुदायों** के लिए समावेशी विकास सुनिश्चित करना शामिल है। **मिशन सीमा शुल्क, आव्रजन, और अन्य नियामक एजेंसियों** के साथ सहयोग के माध्यम से कार्य करेगा।

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (NDRF)
National Disaster Response Fund (NDRF)

हाल ही में **केंद्र सरकार** ने **त्रिपुरा** को **राष्ट्रीय आपदा मोचन कोष (एनडीआरएफ)** से **25 करोड़ रुपये** की अग्रिम राशि जारी करने की मंजूरी दी।

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (NDRF):

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष (NDRF) को **आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005** की **धारा 46** में परिभाषित किया गया है। इसे पहले **राष्ट्रीय आपदा आकस्मिकता निधि (National Calamity Contingency Fund - NCCF)** के नाम से जाना जाता था, जिसका नाम **2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम** के अधिनियमन के साथ बदलकर **NDRF** कर दिया गया।

संरचना: NDRF को भारत सरकार के **'लोक लेखा'** (Public Account) में शामिल किया गया है, जिसे संविधान के **अनुच्छेद 266 (2)** के तहत स्थापित किया गया था। यह खाते ऐसे लेन-देन के लिए उपयोग किए जाते हैं, जहां सरकार **केवल एक बैंकर** के रूप में कार्य करती है, जैसे भविष्य निधि और छोटी बचत। इसके व्यय को संसद द्वारा अनुमोदित करने की आवश्यकता नहीं होती।

भूमिका:

- ✓ **NDRF** का मुख्य उद्देश्य आपदा की स्थिति में **आपातकालीन प्रतिक्रिया, राहत और पुनर्वास के खर्चों** को पूरा करना है।
- ✓ यह गंभीर प्राकृतिक आपदाओं के मामले में **राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष (State Disaster Response Fund - SDRF)** की सहायता करता है, यदि SDRF में पर्याप्त धनराशि उपलब्ध नहीं है।

SDRF का महत्व:

- SDRF, राज्य सरकार के पास अधिसूचित आपदाओं के लिए उपलब्ध प्राथमिक निधि है, जिसका उपयोग **तत्काल राहत प्रदान** करने के लिए किया जाता है।
- केंद्र सरकार सामान्य श्रेणी के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए **SDRF आवंटन का 75% और विशेष श्रेणी के राज्यों (उत्तर पूर्वी राज्यों, सिक्किम, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर) के लिए 90%** योगदान देती है।

वित्तीय प्रावधान:

- ☑ NDRF का वित्त पोषण कुछ वस्तुओं पर **उपकर, उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क** से किया जाता है और इसे वित्त विधेयक के माध्यम से प्रतिवर्ष अनुमोदित किया जाता है।
- ☑ वर्तमान में, NDRF को **वित्त प्रदान** करने के लिए एक **राष्ट्रीय आपदा आकस्मिक शुल्क (National Calamity Contingent Duty - NCCD)** लगाया जाता है।

"जल ही अमृत" कार्यक्रम
"Jal hi Amrit" program

आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय (MoHUA) ने **"जल ही अमृत"** कार्यक्रम की शुरुआत की है, जो **अमृत 2.0** के अंतर्गत आता है। इसका उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में उपचारित अपशिष्ट जल की गुणवत्ता में सुधार लाना और उपचारित जल के पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम के उद्देश्य:

- ✓ पुनर्चक्रण योग्य उच्च गुणवत्ता वाले उपचारित जल को सुनिश्चित करना।
- ✓ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को **उपयोगी जल (सीवेज) उपचार संयंत्रों (एसटीपी)** के प्रबंधन के लिए प्रोत्साहित करना।

पहल के मुख्य पहलू:

- **स्वच्छ जल ऋण प्रणाली:** शहरों के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना, क्षमता का विकास करना, और उन्हें **अच्छी गुणवत्ता वाले उपचारित जल** प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **स्टार रेटिंग प्रणाली:** एसटीपी को **स्टार रेटिंग (3 स्टार से 5 स्टार के बीच) प्रमाणपत्र** के आधार पर स्वच्छ जल क्रेडिट प्रदान किया जाएगा, जो छह महीने के लिए वैध होगा।
- **प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन: स्टार रेटिंग/स्वच्छ जल क्रेडिट** के आधार पर एसटीपी को प्रदान किया जाएगा।
- **जल चक्रीयता को प्रोत्साहित करना:** जल के **पुनर्चक्रण और उसकी गुणवत्ता में सुधार** को बढ़ावा देना।

अमृत 2.0 कार्यक्रम:

- ☑ **मंत्रालय:** **आवास और शहरी मामलों का मंत्रालय (MoHUA)**
- ☑ **कार्यकाल:** 2021 में **5 वर्षों** के लिए लॉन्च किया गया।
- ☑ **उद्देश्य:** सभी सांविधिक शहरों में सभी घरों को कार्यात्मक **नलों के माध्यम से जल आपूर्ति** की सार्वभौमिक कवरेज प्रदान करना।
- ☑ **पहला चरण:** अमृत योजना के **पहले चरण में 500 शहरों में सेप्टेज** प्रबंधन को भी शामिल किया गया।

पृष्ठभूमि:

- ☑ **अमृत 1.0 का शुभारंभ: 2015 में चयनित शहरों और कस्बों** में बुनियादी नागरिक सुविधाओं जैसे **जल आपूर्ति, सेप्टेज प्रबंधन, और तूफान जल निकासी** प्रदान करने के लिए **अमृत 1.0 की शुरुआत** की गई थी।

निष्कर्ष: "जल ही अमृत" कार्यक्रम शहरी जल प्रबंधन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य उपचारित जल की गुणवत्ता में **सुधार और पुनर्चक्रण** को बढ़ावा देना है। इससे शहरों में जल संसाधनों का अधिकतम **उपयोग और स्वच्छता** में सुधार होगा।

सारथी 1.0 पहल / Saarthi 1.0 Initiative

हाल ही में **सारथी 1.0 पहल** का आधिकारिक शुभारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य **अनुसूचित जातियों (एस.सी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), वरिष्ठ नागरिकों, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों, मादक द्रव्यों के शिकारियों, भीख मांगने वाले व्यक्तियों, विमुक्त समुदायों, खानाबदोश जनजातियों, और अन्य वंचित समुदायों को सशक्त** बनाना है। यह एक संयुक्त प्रयास है जो सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग द्वारा चलाया जा रहा है।

सतत विकास के साथ संरेखण: सारथी 1.0 पहल सतत विकास के लिए **संयुक्त राष्ट्र 2030 एजेंडा** के साथ भी संरेखित है। यह विशेष रूप से निम्नलिखित लक्ष्यों पर केंद्रित है:

- **गरीबी उन्मूलन**
- **असमानता को कम करना**
- **सामाजिक सुरक्षा नीतियों को बढ़ावा देना**

कार्यक्रम का महत्व:

सारथी 1.0 का शुभारंभ **सामाजिक कल्याण** के सबसे **कमजोर वर्गों** की जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह उन्हें **सरकारी कल्याण योजनाओं** तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचने में मदद करेगा। **कार्यपालिका और न्यायपालिका** के बीच **तालमेल** यह सुनिश्चित करेगा कि सभी के लिए सामाजिक न्याय को मजबूत किया जाए।

जागरूकता और कानूनी सहायता: सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग, **एनएएलएसए** के सहयोग से, **जागरूकता सृजन और पहुंच** को जमीनी स्तर तक बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। इसके अंतर्गत:

- **राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरण (एसएलएसए)** और **जिला कानूनी सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए)** के माध्यम से देश भर में जागरूकता शिविर आयोजित किए जाएंगे।
- इन शिविरों में **पांच महत्वपूर्ण अधिनियमों** के बारे में जागरूकता सुनिश्चित करने पर **ध्यान केंद्रित किया जाएगा:**
    1. **नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955**
    2. **अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989**
    3. **माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007**
    4. **ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019**
    5. **मैनुअल स्कैवेंजर के रूप में रोजगार का निषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम, 2013**

हिमालयी आपदाओं पर पर्माफ्रॉस्ट क्षरण का प्रभाव

Impact of permafrost degradation on Himalayan disasters

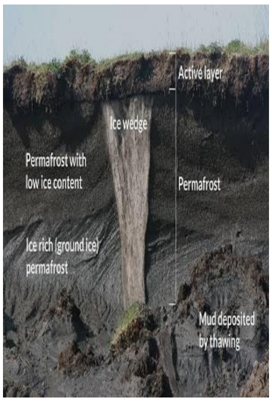

भारत के **आर्कटिक अभियान** के तहत, **ग्लेशियोलॉजिस्ट हिमालय** में जलवायु परिवर्तन के कारण **आपदा जोखिमों** का आकलन करने के लिए **पर्माफ्रॉस्ट क्षरण** पर शोध कर रहे हैं। यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि हिमालयी क्षेत्र में पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने से प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बढ़ रहा है।

पर्माफ्रॉस्ट की परिभाषा:

पर्माफ्रॉस्ट या **स्थायी तुषार-भूमि** वह मृदा है जो **कम-से-कम दो वर्षों तक 0°C (32°F) या उससे नीचे जमी** रहती है। यह आमतौर पर **उच्च अक्षांश और ऊँचाई** वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। पर्माफ्रॉस्ट एक मिश्रण है जिसमें **मृदा, चट्टान, और रेत शामिल** होते हैं, जो वर्ष भर बर्फ से जमी हुई एक परत के रूप में होते हैं।

- **ग्लोबल वार्मिंग और पर्माफ्रॉस्ट क्षरण:** ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप **पर्माफ्रॉस्ट का पिघलना** एक गंभीर समस्या बन गई है। जब पर्माफ्रॉस्ट पिघलता है, तो यह **भूस्खलन** जैसी घटनाओं का कारण बन सकता है, जो बुनियादी ढाँचे को प्रभावित कर सकती हैं।
- **आपदाओं से संबंध:** भारतीय हिमालय में **पर्माफ्रॉस्ट और प्राकृतिक आपदाओं** के बीच संबंध की जानकारी की कमी एक महत्वपूर्ण अंतर है। हाल ही में, **दक्षिण ल्होनक ग्लेशियल झील (सिक्किम)** के फटने जैसी घटनाएं इस संबंध की गंभीरता को दर्शाती हैं। इस प्रकार की घटनाएं दिखाती हैं कि पर्माफ्रॉस्ट क्षरण के कारण जल स्तर में वृद्धि और बाढ़ का खतरा बढ़ता है।
- **अनुसंधान का उद्देश्य:** ग्लेशियोलॉजिस्ट का उद्देश्य आर्कटिक क्षेत्रों में पर्माफ्रॉस्ट का अध्ययन करके **आंकड़ों के अंतराल** को कम करना है। इसके माध्यम से, वे हिमालयी स्थलाकृति के निष्कर्षों का लाभ उठाकर स्थानीय समुदायों में **जागरूकता उत्पन्न करने और पूर्व चेतावनी प्रणालियों** को विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं।

निष्कर्ष: पर्माफ्रॉस्ट क्षरण का अध्ययन न केवल **जलवायु परिवर्तन के प्रभावों** को समझने में मदद करेगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगा कि स्थानीय समुदायों को आपदाओं से बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकें। दी**र्घकालिक बुनियादी ढाँचे** की योजना के लिए जागरूकता उत्पन्न करना और पूर्व चेतावनी प्रणालियों को स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है ताकि हिमालयी क्षेत्र में **प्राकृतिक आपदाओं** के प्रभाव को कम किया जा सके।

SSC TEST SERIES
CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)
Only at
99/-Year
Enroll Now !

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)

299/- YEAR

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

RO/ARO
(TEST SERIES)

ONLY 299/- YEAR

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

BPSC
(TEST SERIES)

ONLY 299 YEAR

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

SSC (TEST SERIES)

ONLY 99/- YEAR

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

RPF (TEST SERIES)

ONLY 99/- YEAR

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

2024
GA FOUNDATION
RECORDED BATCH
Subject
HISTORY ,POLITY
GEOGRAPHY
ECONOMICS
Price
1499/-
Validity
1 Year
By Ankit Avasthi Sir
Apni Pathshala

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now